B.A LL.B 5 YEAR

II SEM

HISTORY

B.ALL.B (II Sem) HISTORY

भारत पर तुर्की आक्रमण :->

अरबों के बाद तुर्कों ने भारत पर आक्रमण किया। अलप्तगीन नामक एक तुर्क सरदार ने गजनी में स्वतन्त्र तुर्क राज्य की स्थापना की। लगभग 977 में अलप्तगीन के दामाद सुबुक्तगीन ने गजनी पर अपना अधिकार कर लिया। लगभग 986 में सुबुक्तगीन ने हिन्दूशाही राजवंश के राजा जयपाल के खिलाफ एक संघर्ष में भाग लिया, इसमें जयपाल की पराजय हुई। सुबुक्तगीन के मरने से पूर्व इसके राज्य की सीमायें अफगानिस्तान, खुरासान, बल्ख एवं पश्चिमोत्तर भारत तक फैली थीं।

सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी महमूद गजनवी गजनी की गद्दी पर बैठा। 'तारीख ए यामीनी' के अनुसार महमूद ने सीस्तान के राजा खलफ बिन अहमद को पराजित कर सुल्तान की उपाधि धारण की। इतिहासविदों के अनुसार सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला महमूद पहला तुर्क शासक था। महमूद गजनवी ने भारत पर करीब सत्रह बार आक्रमण किया। ये सारे आक्रमण 1000 से 1026 तक किये गये। अपने भारतीय आक्रमणों के समय महमूद ने 'जेहाद' का नारा दिया और साथ ही अपना नाम 'बुत शिकन' रखा। लगभग 1030 में महमूद की गजनी में मृत्यु हो गई।

महमूद के भारतीय आक्रमण का वास्तविक उद्देश्य धन की प्राप्ति थी। वह एक मूर्तिभंजक आक्रमण था। महमूद की सेना में सेवंदराय एवं तिलक जैसे हिन्दू उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति थे। महमूद के भारत आक्रमण

के समय उसके साथ प्रसिद्ध इतिहासविद्, गणितज्ञ, भूगोलवेत्ता खगोल एवं दर्शन शास्त्र का ज्ञाता साथ ही 'किताबुल हिन्द' का लेखक अलबरूनी भारत आया। अलबरूनी महमूद का दरबारी कवि था। इसके अतिरिक्त इतिहासकार 'उतबी' तारीख-ए-सुबुक्तगीन का लेखक 'बेहाकी' भी इसके साथ आये। बेहाकी को इतिहासकार लेनपूल ने 'पूर्वीपेप्स' की उपाधि प्रदान की। 'शाहनामा' का लेखक 'फिरदौसी' आदि इसके दरबारी कवि थे।

शिहाबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मुहम्मद गोरी ने भारत में तुर्क राज्य की स्थापना की। गजनी और हिरात के मध्य स्थित छोटा पहाड़ी प्रदेश गोर पहले महमूद गजनवी के कब्जे में था। गोर में 'शंसबानी वंश' सबसे प्रधान वंश था। मुहम्मद गोरी ने भी भारत पर अनेक आक्रमण किये। इसने प्रथम आक्रमण 1175 में मुल्तान के विरुद्ध किया। एक दूसरे आक्रमण के अन्तर्गत गोरी ने 1178 में गुजरात पर आक्रमण किया। यहाँ पर चालुक्य सोलंकी वंश का शासन था। इसी वंश के भीम द्वितीय मूलराज ने मु० गोरी को आबू पर्वत के समीप परास्त किया। सम्भवत: यह मु० गोरी की प्रथम पराजय थी। इसके बाद 1179-86 के बीच उसने पंजाब पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। 1179 में इसने पेशावर को तथा 1185 में स्यालकोट को जीता। 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान के साथ गोरी की भिडन्त तराइन के मैदान में हुई। इस युद्ध में गोरी बुरी तरह परास्त हुआ। इस युद्ध को 'तराईन का प्रथम युद्ध' कहा गया। तराईन का द्वितीय युद्ध '1192 ई० में तराइन के मैदान में हुआ, इस युद्ध का परिणाम मु० गोरी के पक्ष में रहा। पृथ्वी राज चौहान की हत्या कर दी गई। 1194 ई० में प्रसिद्ध चन्दावर का युद्ध मु० गोरी

एवं राजपूत नरेश जयचन्द्र के बीच लड़ा गया। जयचन्द्र की पराजय के उपरान्त उसकी हत्या कर दी गई। जयचन्द्र को पराजित करने के उपरान्त मु० गोरी अपने विजित प्रदेशों की जिम्मेदारी कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंप कर वापस गजनी चला गया। ऐबक ने अपनी महत्वपूर्ण विजय के अन्तर्गत 1194 ई० में अजमेर को जीतकर यहाँ पर स्थित जैनमंदिर एवं संस्कृत विश्वविद्यालय को नष्ट कर उनके मलबे पर क्रमशः 'कुव्वत-उल-इस्लाम' एवं 'ढाई दिन का झोपड़ा' का निर्माण करवाया। ऐबक ने (1202-3) ई० में कुदेलखण्ड के मजबूत कालिंजर के किले को जीता। 1197 से 1205 ई० के मध्य ऐबक ने बंगाल एवं बिहार पर आक्रमण कर उदण्डपुर, बिहार, विक्रमशिला एवं नालन्दा विश्वविद्यालय पर अधिकार कर लिया।

1205 ई० में मु० गोरी पुनः भारत आया और इस बार इसका मुकाबला खोक्खरों से हुआ। इसने खोक्खरों को पराजित कर बुरी तरह कत्ल किया। इस विजय के बाद मु० गोरी जब वापस गजनी जा रहा था तो मार्ग में 15 मार्च, 1206 ई० में उसकी हत्या कर दी गई। अन्ततः उसके शव को गजनी ले जाकर दफनाया गया। गोरी की मृत्यु के बाद उसके गुलाम सरदार कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई० में गुलाम वंश की स्थापना की।

तुर्कों की भारत में सफलता तथा राजपूतों की पराजय के कारण :->

भारत पर प्राचीन समय से विदेशी आक्रमण होते रहे थे, परन्तु भारत में शक्तिशाली राजाओं की शक्ति के सामने कोई विदेशी अपनी इस अभिलाषा को पूरा न कर सका। दसवीं, ग्यारहवीं शताब्दी में भारत की अपार धन सम्पत्ति को इस्लाम के प्रचारप्रसार के लिए तुर्कों ने भारत पर आक्रमण किया प्रारम्भ में तो वे सफल न हो सके परन्तु 1192 ई० में मुहम्मद गोरी के तराइन के मैदान में विजय तथा 1194 ई० में चन्दावर के विजय के उपरान्त भारतीय इतिहास में अत्यन्त महत्व है, क्योंकि इन घटनाओं के पश्चात् तुर्की को उद्देश्यों की प्राप्त करने में सफल हो सके। डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव के अनुसार, राजनीतिक एकता का अभाव, सामाजिक विभेद, ब्राह्मणवाद का उत्थान, नैतिक पतन और भारतीयों की तुलना में तुर्कों की रणनीति, सैनिक संगठन, साधन आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ होना इसका कारण बताया'।

भारत में तुर्कों की सफलता एवं राजपूतों की पराजय के निम्नलिखित कारण थे।

1-> सैनिक कारण

(i) राजपूत राजाओं के पास अस्थायी सेना का अभाव
(ii) तुर्कों की शक्तिशाली अश्व सेना
(iii) राजपूतों की दोषपूर्ण युद्ध प्रणाली
(iv) राजपूतों द्वारा धर्म युद्ध करना
(v) राजपूतों की रक्षात्मक नीति
(vi) गुप्तचर व्यवस्था की कमी।

i→ राजपूत राजाओं के पास स्थायी सेना का अभाव →

राजपूत शासकों ने सैन्य संगठन को कुशल तथा सुदृढ़ बनाने की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। उनके पास नियमित सेना का अभाव था जबकि तुर्की आक्रान्ताओं के पास अनुभवी युद्ध विधा में निपुण, संगठित एवं स्थायी सेना थी।

ii→ तुर्कों की शक्तिशाली अश्वसेना →

तुर्कों की अश्वसेना राजपूतों की अश्व सेना तथा हाथियों की सेना से श्रेष्ठ थी, राजपूत में पैदल सैनिकों की संख्या अधिक थी जो कि घुड़सवार सैनिकों का मुकाबला नहीं कर पाते थे।

(iii→ राजपूतों की दोषपूर्ण युद्ध प्रणाली →

राजपूतों की युद्ध प्रणाली के समय के साथ परिवर्तन नहीं किये गये थे। वे अपनी परम्परागत शैली से युद्ध करते थे, जबकि तुर्की सैनिक उस क्षेत्र से आते थे जहाँ अनेक देशों और जातियों के कुशल सेनानायक नवीन रणपद्धतियों का सृजन करते थे। तुर्क घोड़े की सेना का इस्तेमाल युद्ध के समय तथा हाथी का इस्तेमाल दुर्ग तोड़ने के लिए करते थे, जबकि राजपूत हाथी सेना का इस्तेमाल करते थे, प्रायः हाथी तोपों की आवाज सुन कर अपना संतुलन खो बैठते थे और अपनी ही सेना को रौंद देते थे।

iv राजपूतों द्वारा धर्म युद्ध करना→
राजपूतों द्वारा धर्म युद्ध विजय प्राप्त करते थे जबकि तुर्क सम्भवत: युद्ध रणनीति को अपना कर, शत्रु की सेना को नष्ट करने का प्रयास करते थे।

V राजपूतों की रक्षात्मक नीति→
राजपूत शासक मुख्यत: रक्षात्मक नीति का पालन करते थे जबकि तुर्क आक्रामक नीति का परिचय देते थे।

VI गुप्तचर व्यवस्था की कमी→ राजपूतों की सेना पराजय का एक प्रमुख गुप्तचर व्यवस्था की कमी थी।

राजनीतिक कारण

i→ राष्ट्रीयता का अभाव
ii→ दोषपूर्ण उत्तराधिकार नियम
iii→ सीमान्त प्रदेशों के प्रति उदासीनता
iv→ एकांकी सामरीय दृष्टिकोण

i→ राष्ट्रीयता का अभाव→
राजपूतों में बारहवीं शताब्दी आने तक राष्ट्रीयता की भावना अत्यन्त निर्बल थे, भारत विभिन्न छोटे-2 राज्यों में बँटा हुआ था और परस्पर अपनी राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के लिए संघर्षरत रहते थे तुर्कों की सफलता का ये एक मुख्य कारण था।

(ii) दोषपूर्ण उत्तराधिकार नियम→
राजपूत काल में उत्तराधिकार नियम, वंश परम्परागत शासन प्रणाली थी जबकि तुर्कों में ऐसी व्यवस्था नहीं थी।

(iii) सीमान्त प्रदेशों के प्रति उदासीनता :→

राजपूत कालीन शासकों ने भारत के सीमान्त प्रदेशों की सुरक्षा के लिए कोई प्रबन्ध नहीं किया जिसके परिणामस्वरूप उत्तर पश्चिम से आने वाले विदेशियों ने इसका लाभ उठाया।

IV→ एकांकी सामरीय दृष्टिकोण :→

राजपूत शासक प्राय: क्षेत्र विस्तार के लिए युद्ध करते थे और जन-कल्याण का कोई कार्य नहीं करते थे, जिसका कु-प्रभाव राज्य की सुदृढ़ता पर पड़ी।

सांस्कृतिक कारण

(i) धार्मिक कारण

(ii) सामाजिक कारण

(i) धार्मिक कारण :→ राजपूतयुगीन समाज में अनेक सम्प्रदाय विद्यमान थे, जिनमें पारस्परिक वैमनस्य शास्त्रीय मतभेद तक सीमित न होकर षड्यंत्र तक पहुँच जाता था। उस समय राजपूत शासक ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों में विश्वास रखते थे जबकि तुर्कों में अन्धविश्वास नहीं था। वे जीवनसुख के लिए स्वयं प्रयत्नों में विश्वास करते थे।

(ii) सामाजिक कारण :→ सामाजिक कारणों के बारे में डा० निजामी जैसे कुछ लेखकों ने हिन्दुओं जाति-पाँति को गिनाया है। उनका कहना था कि भेदभाव ने हिन्दू समाज को शिथिल कर दिया था, यह शिथिलता ही उनकी पराजय का कारण बनी।

व्यक्तिगत कारण :-> प्रत्येक युद्ध में विजय अथवा पराजय सेना के नेतृत्व अथवा सेनापति की योग्यता पर निर्भर करती है महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी और कुतुबुद्दीन ऐबक उच्चकोटि के सेनानायक थे। उन्हें अनेक युद्धों का अनुभव भी प्राप्त था। यद्यपि राजपूत राजाओं में जयपाल, भोज परमार, पृथ्वीराज-चौहान, आदि कुशल सेनानायक थे, तथापि वे तुर्क विजेताओं के समान दूरदर्शी न थे। इसके अतिरिक्त राजपूत राजाओं ने अनेक मूर्खता पूर्ण गलतियाँ की। सिन्ध का राजा दाहिर, पंजाब का शासक जयपाल आदि के द्वारा की गयी गलतियाँ विशेष उल्लेखनीय है। जयपाल ने अपनी पराजय से दुख अपमान के कारण आत्महत्या तो कर लिया किन्तु उससे यह न हो सका कि शत्रु से बदला के लिए पुनः और अधिक तैयारी करता और सफलता प्राप्त करता

गुलाम वंश (1206 ई० - 1290 ई०)

The Slave Dynasty

मु० गोरी ने भारत पर विजय प्राप्त की थी किन्तु उसने भारत पर शासन नहीं किया था। गोरी की कोई पुत्रनहीं था अतः उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके भारतीय साम्राज्य का स्वामी गोरी का सबसे प्रमुख गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक बना। इस प्रकार कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में गुलाम वंश की नींव डाली।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 - 1210 ई०

कुतुबुद्दीन ऐबक का प्रारम्भिक जीवन

भारत में तुर्की साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था। उसके माता-पिता तुर्की थे और उसका जन्म भी तुर्किस्तान में हुआ था। जब वह केवल एक बालक था, उसे एक व्यापारी निशापुर ले गया था। वहाँ उसे एक काजी ने दास के रूप में खरीद लिया। काजी ने उसे अपने पुत्रों के साथ धार्मिक व सैनिक प्रशिक्षण दिया। जब काजी की मृत्यु हो गई तो उसके पुत्रों ने उसे एक व्यापारी के हाथ बेच दिया जो उसे गजनी ले गया जहाँ उसे मुहम्मद गोरी ने खरीद लिया।

कुतुबुद्दीन ऐबक का उत्थान :-

कुतुबुद्दीन ऐबक में समस्त प्रशंसनीय गुण व प्रभावित करने वाले तत्व विद्यमान थे। उसके अन्दर तड़क-भड़क बाहरी दिखावा नहीं था।

उसने अपने साहस, उदारता व पौरुष से अपने स्वामी का ध्यान आकृष्ट कर लिया। अपने गुणों के कारण ही मु० गोरी ने उसे महत्वपूर्ण पद प्रदान किये। उसे 'अमीर-ए-अखूर' (अस्तबलों का अधिकारी) भी नियुक्त किया गया। भारतीय विजयों का प्रबन्धक बना दिया गया। इस प्रकार "केवल शासन प्रबन्ध के क्षेत्र में ही नहीं वरन् अपनी विजयों के क्षेत्र को और भी अधिक विस्तृत करने में अपने विवेक का प्रयोग करने की उसे पूरी छूट मिल गई। ऐबक ने दिल्ली के निकट इन्द्रप्रस्थ को अपना केन्द्र बनाया।

कुतुबुद्दीन ऐबक का सिंहासनारोहण
Succession of Qutub-ud-Dinaibeq

सन् 1206 ई० में मु० गोरी की मृत्यु के पश्चात् उसका कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण, मो० गोरी के पश्-चात् वह स्वतन्त्र शासक बना।

ऐबक के समक्ष समस्याएँ :-

जिस समय ऐबक स्वतन्त्र शासक बना उसके समक्ष अनेक समस्याएं थी जिनका समाधान किया जाना आवश्यक था। ऐबक की तत्कालीन समस्याएं निम्नलिखित थी।

1- अमीरों की समस्या
2- हिन्दू राज्य
3- सीमाप्रान्तों की सुरक्षा

(1) अमीरों की समस्या :- ऐबक जब गद्दी पर बैठा तो उसके समक्ष अमीर उसे अपना सुल्तान स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। यल्दौज, कुबाचा, तथा खिल्जी सरदार उसकी अधीनता स्वीकार करना अपना अपमान समझते थे। यह अत्यन्त जटिल समस्या थी जिसका समाधान करना अत्यन्त आवश्यक है। जिसकी वजह से कुतुबुद्दीन ऐबक को अनेक कठिनाईयों का सामना करना और भी आवश्यक था।

2- हिन्दू राज्य :- हिन्दुओं की बढ़ती हुई शक्ति भी कुतबुद्दीन ऐबक के लिए चुनौती बनी हुई थी। कुतुबुद्दीन ऐबक के लिए चन्देलों, गाहड़वाल व प्रतीहारों का दमन करना अत्यन्त आवश्यक था।

3- सीमाप्रान्तों की सुरक्षा :- ऐबक के लिए आवश्यक था कि वह सीमाप्रान्तों की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध करें। ख्वारिज्म के शाह ने मध्य एशिया में जिस, विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी, उसे देखते हुए ऐसा करना और भी आवश्यक था।

ऐबक के कार्य (work of Aibak)

कुतुबुद्दीन ऐबक का चार वर्षीय अल्पकालीन शासनकाल में समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसके चार वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद थे। उसे निरन्तर अपने साम्राज्य की सुरक्षा में व्यस्त रहना पड़ा जिसके कारण वह देश

की शासन व्यवस्था में सुधार न कर सका। उसकी शासन पद्धति सैनिक थी तथा सेना की सहायता से ही वह प्रशासन करता था।

(1) यल्दौज से संघर्ष :→

कुतुबुद्दीन को सर्वप्रथम ताजुद्दीन यल्दौज का सामना करना पड़ा। गौरी की मृत्यु के पश्चात् ने भी अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी तथा गजनी का स्वतन्त्र शासक बन गया। कालान्तर में यल्दौज को गजनी से भागना पड़ा जिसका लाभ उठाते हुए ऐबक गजनी पहुँचा तथा 1208 ई० में उस पर अधिकार कर लिया। ऐबक के शासन को गजनी की जनता ने पसन्द नहीं किया अतः शीघ्र ही ऐबक को गजनी छोड़ना पड़ा। ऐबक के गजनी लौट जाने पर यल्दौज ने पुनः गजनी पर अधिकार कर लिया। यद्यपि ऐबक गजनी में यल्दौज की सत्ता समाप्त न कर सका। किन्तु उसको भारत पर भी अधिकार ऐबक ने न करने दिया।

(2) बंगाल में विद्रोह :

ऐबक के शासनकाल के दौरान बंगाल तथा बिहार में विद्रोह हो रहे थे। अलीमर्दान खां लखनौती का स्वतन्त्र शासक बन गया था, किन्तु खिल्जी सरदारों ने उसे बन्दी बना लिया। अलीमर्दान खां किसी प्रकार से वहाँ से भागकर दिल्ली आया तथा ऐबक से वहाँ भागकर दिल्ली आया तथा ऐबक से सहायता मांगी

ऐबक ने अपने दूत के रूप में कैमाज रूमी को बंगाल भेजा जिसके अधिक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप खिल्जी सरदार ऐबक को अपना शासक मानने को राजी हो गये। अलीमर्दान पुनः बंगाल का शासक बन गया।

3→ सिन्ध एवं मुल्तान :→ गोरी की मृत्यु के पश्चात् सिन्ध एवं मालवा के प्रान्तों पर अधिकार कर लिया। ऐबक सिन्ध व मालवा पर अधिकार करना चाहता था किन्तु वह ऐसा न सका अतः ऐबक ने कूटनीति का सहारा लेते हुए अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन से कर दिया ताकि वह बंगाल की स्थिति पर पूर्ण ध्यान दे सके। इस प्रकार उसने वैवाहिक सम्बन्धों का सहारा लेकर अपने शत्रु से सम्बन्धों को सुधारा।

इस प्रकार से कुतुबुद्दीन ऐबक अपने चार वर्षीय शासनकाल में समस्याओं से घिरा रहा। 1210 ई० में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी।

ऐबक का मूल्यांकन :→ कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में इस्लामी साम्राज्य का संस्थापक था। वह एक सफल एवं महान् सेनानायक था। उसने कूटनीति का परिचय देते हुए वैवाहिक सम्बन्धों की सहायता से अपनी स्थिति को मजबूत बनाने का प्रयास किया।

डॉ आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने रेवक की प्रशंसा करते हुए लिखा है " वह एक प्रतिभाशाली सैनिक था और हीन तथा दरिद्र अवस्था से उठकर शक्ति तथा यश के शिखर पर पहुँच गया। उसकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि, उसने गजनी से सम्बन्ध विच्छेद करके भारत को उसके प्रभुत्व से मुक्त कर दिया।

———x———x———x———

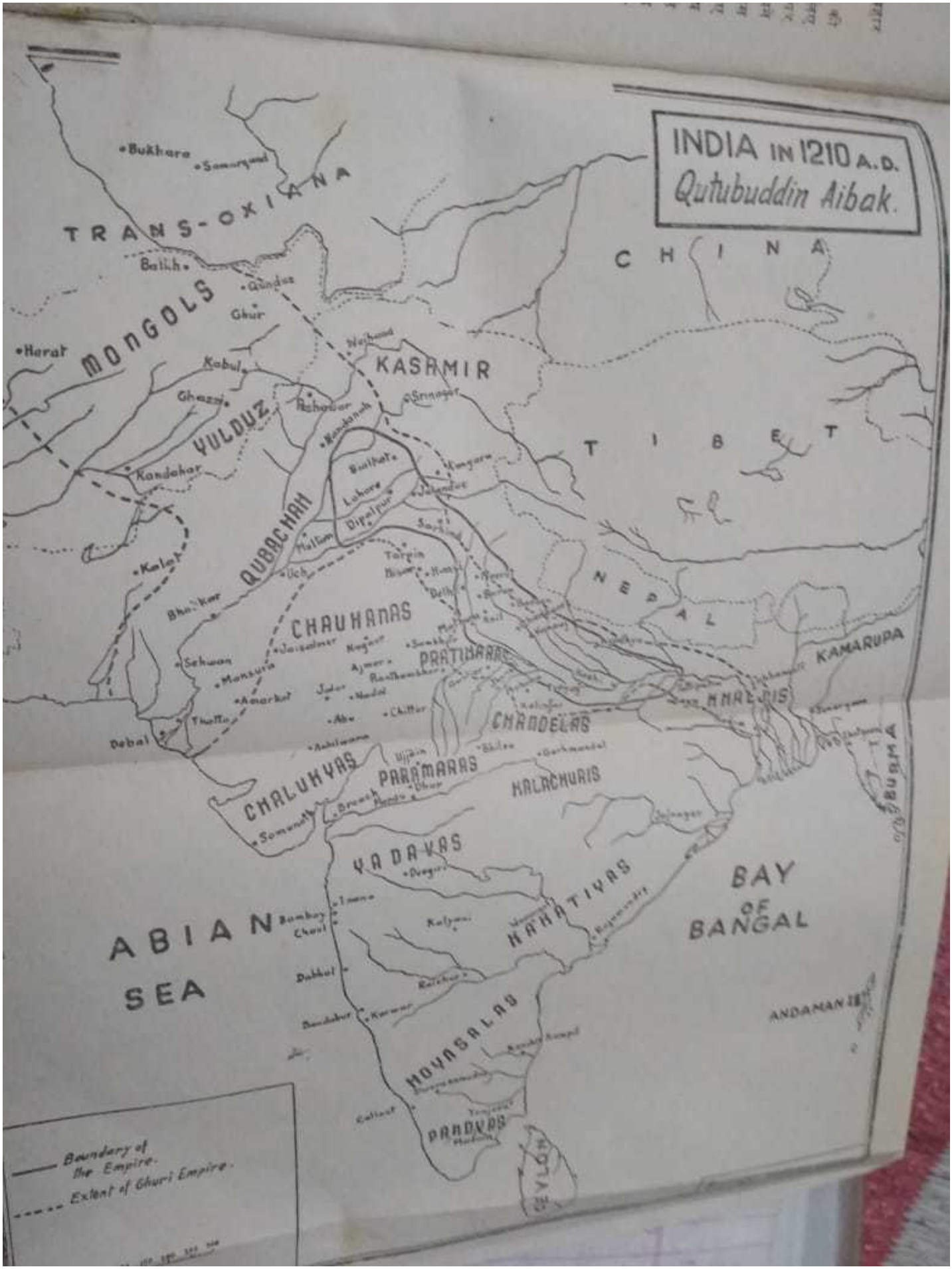

INDIA IN 1210 A.D.
Qutubuddin Aibak.
TRANS-OXIANA
Bukhara
Samarqand
Balkh
Qunduz
Ghur
MONGOLS
Herat
Kabul
Ghazni
YULDUZ
Kandahar
Kalat
KASHMIR
Srinagar
CHINA
TIBET
NEPAL
KAMARUPA
QUBACHAH
Lahore
Dipalpur
Multan
Uch
Bhakkar
Sehwan
Mansura
Amarkot
Thatta
Debal
CHAUHANAS
Jaisalmer
Ajmer
Delhi
Jalor
Abu
Chittor
PRATIHARAS
CHANDELAS
CHALUKYAS
Somnath
Broach
Ujjain
PARAMARAS
Dhar
KALACHURIS
YADAVAS
Devagiri
KAKATIYAS
Thana
Bombay
Chaul
Dabhol
Karwar
Calicut
HOYSALAS
PANDYAS
Madura
CEYLON
ABIAN
SEA
BAY
OF
BANGAL
ANDAMAN IS
BURMA
Boundary of
the Empire.
Extent of Ghuri Empire.

गुलाम वंश (1206-1290 ई०)

कुतबुद्दीन ऐबक
(1206 - 1210)
↓
आरामशाह
(1210 ई० - 1211 ई०)
↓
इल्तुतमिश (1211 ई० - 1236 ई०)
↓
रुकनुद्दीन फिरोजशाह (1236 ई०)
↓
रजिया (1236 ई० - 1240 ई०)
↓
मुईजुद्दीन बहरामशाह (1240 - 1242 ई०)
↓
अलाउद्दीन मसूदशाह (1242 - 1246 ई०)
↓
नासिरुद्दीन महमूद (1246 ई० - 1266 ई०)
↓
बलबन (1266 ई० - 1286 ई०)
↓
कैकुबाद (1286 - 1290 ई०

इल्तुतमिश (1210-1236)

इल्तुतमिश का पूरा नाम शम्स-उद्दीन इल्तुतमिश था। वह मध्य एशिया के इल्बारी कबीले के तुर्क माता-पिता से उत्पन्न हुआ था और बाल्यकाल में ही उसके ईर्ष्यालु भाइयों ने उसे दास बनाकर बेच दिया था। जमालुद्दीन नामक एक व्यापारी उसे खरीदकर गजनी ले गया। इसके पश्चात् दिल्ली लाया गया और दुबारा कुतुबुद्दीन के हाथों बेच दिया गया। बाल्यकाल से ही इल्तुतमिश के ललाट पर होनहार बालक के चिह्न थे। अपने स्वामी के विपरीत सुन्दर था। उसने सैनिक-शिक्षा प्राप्त की थी तथा लिखना-पढ़ना भी सीख लिया था, कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसकी योग्यता से प्रभावित होकर इसे उच्च पद प्रदान किये तथा अपनी पुत्री का विवाह भी इसके साथ कर दिया।

सिंहासनारोहण

ऐबक की आकस्मिक मृत्यु हो जाने के कारण उसने अपने उत्तराधिकार का चुनाव नहीं कर सका अतः लाहौर के तुर्क अधिकारियों ने ऐबक के विवादित पुत्र आरामशाह (इसे इतिहासकार नहीं मानते) को लाहौर की गद्दी पर बैठाया परन्तु दिल्ली के तुर्क सरदारों एवं नागरिकों के विशेष के फलस्वरूप ऐबक के दामाद इल्तुतमिश को, जो उस समय बदायूँ का सूबेदार था, को दिल्ली को आमंत्रित कर राज्यसिंहासन पर बैठाया गया। आरामशाह एवं इल्तुतमिश के बीच संघर्ष हुआ। जिसमें आरामशाह को बन्दी बनाकर हत्या कर दी गयी और इस तरह ऐबक वंश के बाद इल्बारी वंश का शासन प्रारम्भ हुआ।

शासक बनने के पश्चात उसकी प्रमुख समस्याएं :-

गद्दी पर बैठने के पश्चात उसके सम्मुख सबसे प्रमुख समस्या गद्दी के प्रबल दावेदार उसके दो प्रमुख प्रतिद्वंदी — ताजुद्दीन यल्दौज दिल्ली के राज्य को गजनी का अंग मात्र मानता था और उसे गजनी में मिलाने का कोशिश करता रहता था जबकि ऐबक तथा उसके बाद इल्तुतमिश अपने आपको स्वतंत्र मानते थे। यल्दौज के साथ तराइन के मैदान में युद्ध किया जिसमें यल्दौज पराजित हुआ। उसकी हार के बाद गजनी के किसी शासक ने दिल्ली की सत्ता पर अपना दावा पेश नहीं किया।

कुबाचा ने पंजाब तथा उसके आसपास के क्षेत्रों पर अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। सन् 1217 में उसने कुबाचा के विरुद्ध कूच किया। कुबाचा बिना युद्ध किये भाग गया। इल्तुतमिश उसका पीछा करते हुए मंसूरा नामक जगह पर पहुँचा जहाँ पर उसने कुबाचा को पराजित किया और भाटिंडा पर उसका कब्जा हो गया। पर सिंध, मुल्तान, उच्छ तथा सिन्ध सागर दोआब पर कुबाचा पर नियंत्रण बना रहा। इसी समय मंगोलों के आक्रमण के कारण इल्तुतमिश का ध्यान कुबाचा पर से तत्काल हट गया पर बाद में कुबाचा को एक युद्ध में उसने परास्त किया जिसके फलस्वरूप कुबाचा सिंधु नदी में कूद गया जहाँ डूबने से उसकी मृत्यु हो गयी। चंगेज खाँ के आक्रमण के बाद उसने पूर्व की ओर ध्यान दिया और बिहार तथा बंगाल को अपने अधीन एक बार पुनः फिर कर लिया।

इल्तुतमिश की विजय अभियान :→

1225 ई० में इल्तुतमिश ने बंगाल के स्वतन्त्र शासक हुसामुद्दीन इवाज के विरुद्ध अभियान किया। इवाज ने बिना युद्ध के ही उसकी अधीनता में शासन करना स्वीकार लिया पर इल्तुतमिश के दिल्ली वापस लौटते ही पुनः विद्रोह कर दिया। इस बार इल्तुतमिश के पुत्र नासिरुद्दीन महमूद ने 1226 ई० के लगभग उसे पराजित कर लखनौती पर अधिकार कर लिया। दो वर्ष के उपरान्त नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद मलिक मखितमारुद्दीन बल्का खलजी ने बंगाल की गद्दी पर अधिकार कर लिया। 1230 ई० में इल्तुतमिश ने इस विद्रोह को दबाया, संघर्ष में बल्का खिल्जी मारा गया और इस तरह एक बार फिर बंगाल दिल्ली सल्तनत के अधीन हुआ। 1226 ई० में इल्तुतमिश ने रणथंभौर पर तथा 1227 ई० में परमारों की राजधानी मन्दौर पर अधिकार कर लिया। 1231 ई० में इल्तुतमिश ने ग्वालियर के किले पर घेरा डालकर वहाँ के शासक मंगल देव को पराजित किया। 1233 में चंदेलों के विरुद्ध एवं 1234-35 में उज्जैन एवं भिलसा के विरुद्ध उसका अभियान सफल रहा। जनवरी 1229 ई० बगदाद के खलीफा से इल्तुतमिश को सम्मान में 'खिलअत' एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। प्रमाण पत्र प्राप्त होने के बाद इल्तुतमिश वैध सुल्तान एवं दिल्ली सल्तनत एक वैध स्वतन्त्र राज्य बन गया।

खिलअत मिलने के बाद इल्तुतमिश ने 'नासिर अमीर-उल मोमिनीन' की उपाधि ग्रहण की। बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय इल्तुतमिश बीमार हो गए, अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गयी।

इल्तुतमिश का चरित्र एवं मूल्यांकन

इल्तुतमिश वीर किन्तु सावधान सैनिक था। उसमें साहस, बुद्धिमत्ता, संयम तथा दूरदर्शिता आदि महत्वपूर्ण गुण थे। वह योग्य तथा कुशल शासक भी था। जो व्यक्ति प्रारम्भ में गुलाम का रह चुका था, उसके लिए दिल्ली की गद्दी प्राप्त कर लेना और उस पर 25 वर्ष तक शासन करना कोई साधारण बात नहीं थी।

इल्तुतमिश प्रथम मुस्लिम शासक था जिसने शासन व्यवस्था में सुधार करने का प्रयास किया। इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलवाये। इसने सल्तनतकालीन दो महत्वपूर्ण सिक्के - चांदी का टंका (लगभग 175 ग्रेन का) तथा तांबे का जीतल चलवाया। इल्तुतमिश ने 'इक्तादारी व्यवस्था' का प्रचलन किया। राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानान्तरित किया। इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज उस सिराज मलिक दाजुद्दीन को संरक्षण मिला था।

स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबमीनार के निर्माणकार्य को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का

श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है। 'अजमेर की मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने ही करवाया था।

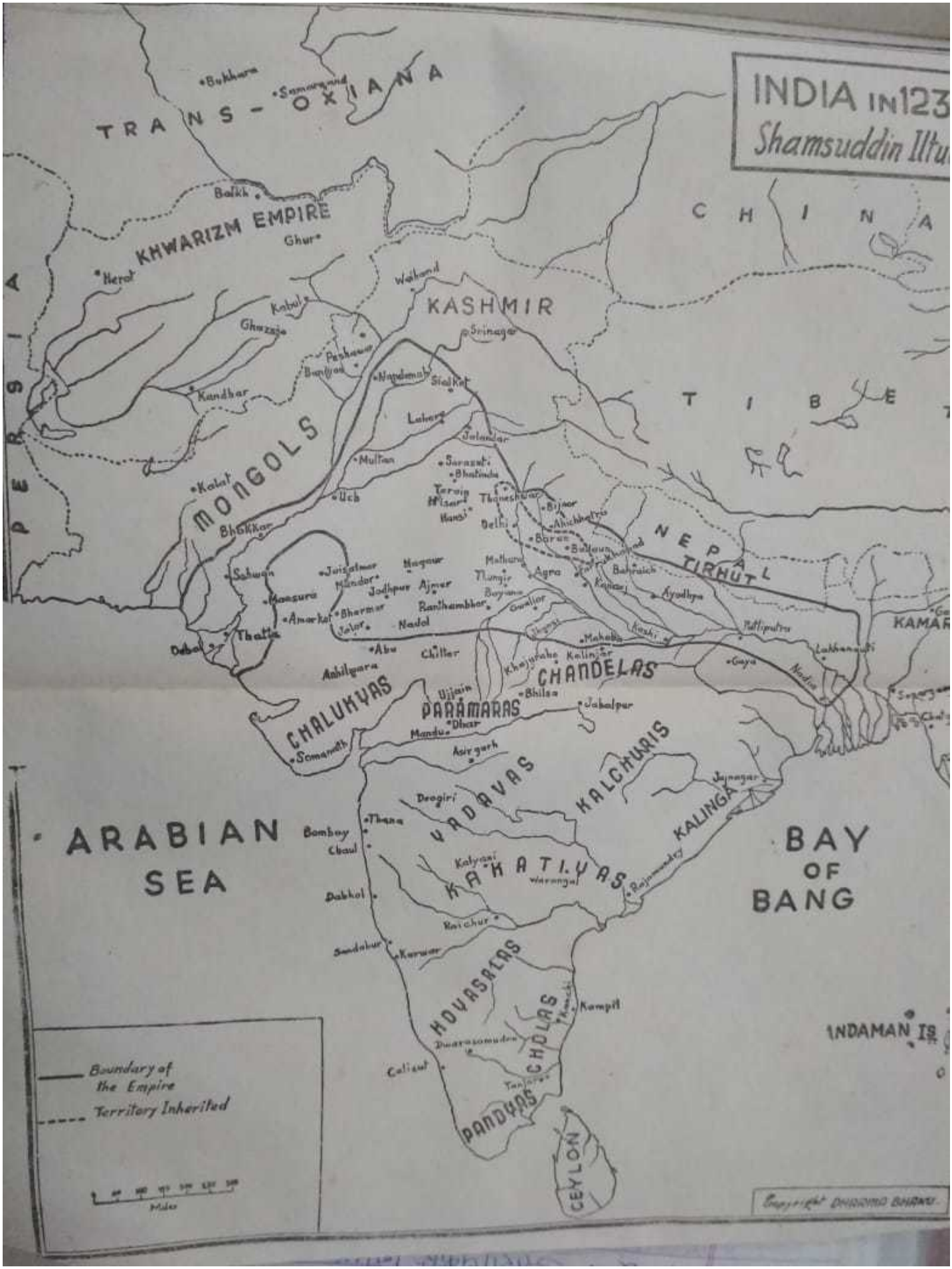

INDIA IN123
Shamsuddin Iltu
TRANS-OXIANA
KHWARIZM EMPIRE
PERSIA
CHINA
KASHMIR
TIBET
MONGOLS
NEPAL
TIRHUT
KAMAR
CHANDELAS
CHALUKYAS
PARAMARAS
YADAVAS
KALCHURIS
KALINGA
KAKATIYAS
HOYSALAS
CHOLAS
PANDYAS
CEYLON
ARABIAN SEA
BAY OF BANG
INDAMAN IS
Bukhara
Balkh
Ghur
Herat
Kabul
Ghazni
Peshawar
Srinagar
Kandhar
Lahore
Jalandar
Multan
Uch
Bhakkar
Sehwan
Mansura
Thatta
Debal
Thaneshwar
Delhi
Hansi
Bhatinda
Bijnor
Badaun
Mathura
Agra
Ajmer
Jodhpur
Nagaur
Jaisalmer
Mandor
Amarkot
Nadol
Jalor
Ranthambhor
Gwalior
Bahraich
Kannauj
Ayodhya
Mahoba
Kalinjar
Gaya
Nadia
Lakhnauti
Abu
Chittor
Anhilwara
Ujjain
Bhilsa
Jabalpur
Dhar
Mandu
Asirgarh
Somnath
Jajnagar
Deogiri
Thana
Bombay
Chaul
Kalyani
Warangal
Dabhol
Raichur
Karwar
Kampil
Dwarasamudra
Calicut
Tanjore
Boundary of the Empire
Territory Inherited
Miles
Copyright DHARMA BHANU